INDIA@70

JAMMU & KASHMIR SAGA

THE JAMMU & KASHMIR SAGA

A Historical narrative with original letters, telegrams, maps, documents as well as archival photographs and videos pertaining to the Kashmir imbroglio

An Exhibition commemorating 70 years of the State's Accession to India

Witness the stories of heroism, valour and sacrifice of our armed forces

FREE ENTRY 10:30 am to 5:30 pm

Open till 10th February, 2018

आयोजनकर्ता

स्थान
राष्ट्रीय अभिलेखागार
जनपथ, नई दिल्ली

11 जनवरी 2018 से
10:30 a.m - 5:30 p.m

निकटतम मेट्रो स्टेशन : कॉन्नि सचिवालय

Website: nationalarchives.nic.in

भारत @70

जम्मू एवं कश्मीर गाथा

राज्य के भारत में
विलय के 70 वर्ष की
स्मृति में एक प्रदर्शनी

भारत, जो विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, ने पिछले वर्ष अपने 70 वर्ष पूरे किए हैं। यह एक ऐतिहासिक क्षण है, और हम आज़ादी की लड़ाई पर विचार करें तो यह गंभीर विषय है। किसी भी नए और स्वतंत्र राष्ट्र की तरह ही इसे कई गतिरोधों का सामना करना पड़ा, फिर भी भारत ने एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में विश्व का सम्मान अर्जित किया है।

70 वर्ष बीत जाने पर भी भारत के विभाजन का सही विमर्श हमें आज भी ज्ञात नहीं है, इसका कारण है कि यह उन शासकों के लिए असुविधाजनक है जिन्होंने भारत का विभाजन किया था; और प्रचलित इतिहास लेखन के अनुसार यह 'अवश्यंभावी' था।

भारत के अन्य क्षेत्रों की तरह ही कश्मीर ने भी उथल-पुथल, हिंसा और कत्लेआम का दौर देखा है। लेकिन कश्मीर की जनता ने विभिन्न संप्रदायों के मानने वाले समाज के लिए जरूरी धार्मिक आस्था और सामाजिक सहिष्णुता निरन्तर बनाए रखी है। कश्मीर में हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई और बौद्ध मेल-जोल से रहते हैं।

The Hindustan Times

KASHMIR ACCEDES TO INDIA

PLEBISCITE SOON ON RULER'S DECISION

SHEIKH ABDULLA TO FORM INTERIM GOVT.

SIKH TROOPS RUSHED FOR PROTECTION OF STATE

हिन्दुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली, 28 अक्तूबर 1947

कश्मीर के नेताओं ने जनभावना का आदर करते हुए राज्य की लोकतंत्र की लड़ाई के शुरूआती दिनों में धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र के आदर्शों को स्वीकार किया। इन्हीं आदर्शों के अनुसार कश्मीर के नेताओं ने पाकिस्तान की आधारशिला रखने वालों की विचार धारा को नकार दिया और अपने सिद्धांतों पर कायम रहे। पाकिस्तान ने उन्हें गुमराह करने के प्रयास किए लेकिन इन प्रयासों के बावजूद कश्मीर में यह भावना बनी रही कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग बनकर ही गौरव और सम्मान के साथ रह सकता है।

राष्ट्रीय अभिलेखागार इस प्रदर्शनी के माध्यम से कश्मीर के संघर्ष की ऐतिहासिक कथा प्रस्तुत करने के साथ-साथ हमारे सशस्त्र बलों के शौर्य और बलिदान के प्रति नई पीढ़ी को जागरूक करने का प्रयास कर रहा है।

हम कश्मीर की गुत्थी से सम्बंधित मूल पत्रों, टेलीग्रामों तथा दस्तावेजों के साथ 1947 के गलियारे में आपका स्वागत करते हैं। इन पत्रों के साथ इतिहास दर्शाने वाले प्राचीन फोटो, मानचित्र और सैनिकों के मानचित्र शामिल हैं। इन गाथाओं में न केवल जम्मू एवं कश्मीर के विलय की स्थितियाँ बल्कि जम्मू एवं कश्मीर राज्य में एकता और शांति की रक्षा के लिए की गई कार्रवाइयों और अंततः भारत की संप्रभुता पर पाकिस्तान के बर्बर आक्रमण के संबंध में भारत की औपचारिक शिकायत के साथ-साथ 70 वर्ष बाद भी देश में मौजूद मुद्दों को प्रकट किया गया है।

ज़ोजिला की विजय, 1948